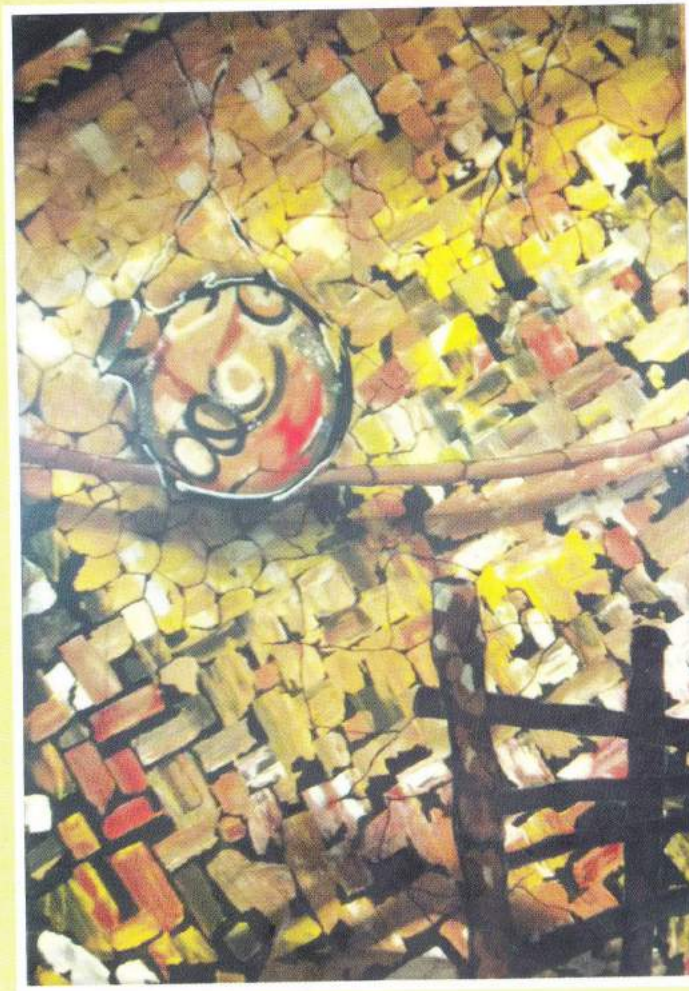


आकांक्षी भारतीय भाषा एवं संस्कृति एक विमर्श



कैलाश पट्टनायक
अरिर्मर्दन कुमार त्रिपाठी

आकांक्षी भारतीय भाषा एवं संस्कृति : एक विमर्श

विषय-सूची

प्रकाशक	:	'सेंटर फॉर एनडेंजर्ड लैंग्वेजेज, विश्वभारती' के लिए 'द मार्जिनलाइज्ड पब्लिकेशन, इग्नू रोड, नई दिल्ली-110068 पंजीकृत कार्यालय, सानेवाड़ी, वर्धा महाराष्ट्र-442001
ई-मेल	:	themarginalised@gmail.com
संपर्क	:	+ 91-8130284314, 9650164016

© विश्वभारती

प्रथम संस्करण	:	2018
आईएसबीएन	:	978-93-87441-30-9 (अजिल्द)
लेआउट, कवर	:	दिनेश कुमार
मुद्रक	:	विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा दिल्ली-110032

आकांक्षी भारतीय भाषा एवं संस्कृति

संपादन : कैलाश पट्टनायक, अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी

AAKANKSHI BHARTIYA BHASHA EVAM SANSKRUTI
edited by Kailash Pattanaik, Arimardan Kumar Tripathi

• संपादकीय	
भाषा, सत्ता एवं लोकतंत्र	
• भारतीय भाषाएँ और उनकी चुनौतियाँ : समाधान के कुछ बिन्दु—वृषभ प्रसाद जैन	11
• भाषा, शक्ति-वर्चस्व और लोकतंत्र—राजीव रंजन गिरि	18
• हिन्दी भाषा और राष्ट्रवाद—जीतेंद्र गुप्ता	64
• भारतीय साहित्य की संकल्पना और रामविलास शर्मा—आशुतोष	78
• मुद्रित माध्यम का हिन्दी पत्रकारिता में भाषा का प्रश्न—कृपाशंकर चौबे	91
• सामाजिक व्यवस्था, अनुष्ठान और लोकसाहित्य—नीलू कुमारी	102
• ज्ञान की आधुनिक अवधारणा और (लोक) भाषा व्यवहार—ऋषि भूषण चौबे	116
• प्राचीन भारतीय नाट्य परंपरा और भाषा की राजनीति—मृत्युंजय प्रभाकर	126

भाषा एवं लोक-संस्कृति

• हो आदिवासी : सामाजिक व्यवस्था, परम्परा और लोक साहित्य—सोनी कुमारी	135
• अरुणाचल की जनजातीय भाषा एवं लोक-साहित्य—राजीव रंजन प्रसाद	146
• अक्षर ब्रह्म का क्षरण—बाल मुकुंद सिन्हा	156
• आदिवासी भाषाओं का विकास : अन्य भाषाओं के संदर्भ में—कमला लकड़ा	167
• लुप्तप्राय भाषाओं का संरक्षण एवं अनुवाद : वैगानी के विशेष संदर्भ में—विंध्यवासिनी पाण्डेय	172
• कुँडुख भाषा-साहित्य में पीयूष लकड़ा का साहित्यिक योगदान—लक्ष्मी उराँव	185

भारतीय साहित्य की संकल्पना और रामविलास शर्मा

आशुतोष

किसी भी भाषा के साहित्य का इतिहास लिखने के लिए रामविलास शर्मा उस भाषा का प्रयोग करने वाले मानव समाज के गठन के स्वरूप को समझने पर जोर देते हैं। इस क्रम में यह स्पष्ट है कि मानव समाज के गठन के रूप समय-समय पर परिवर्तित होते रहते हैं। कबीलाई समाज बाद में सांमती समाज और फिर पूँजीवादी समाज-इन सभी में सामाजिक गठन के रूप एक दूसरे से भिन्न-भिन्न तरह के रहे हैं। प्रत्येक सामाजिक गठन की अपनी भाषा रही है। अतः सामाजिक गठन के बदलते रूप को समझे बगैर भाषा और उसके साहित्य का इतिहास को स्पष्ट नहीं किया जा सकता है। इस सन्दर्भ में रामविलास शर्मा की स्पष्ट मान्यता रही है कि “किसी भी भाषा के साहित्य का इतिहास लिखना हो, इस बात पर विचार करना आवश्यक होगा कि उस भाषा का व्यवहार करने वाले मानव समाज के गठन का रूप कौन सा है? वह मानव समाज विकास की किस अवस्था में है? इसकी जानकारी के बिना उसकी भाषा के साहित्य के इतिहास का विवेचन नहीं किया जा सकता, उस साहित्य की सामाजिक विषयवस्तु का ऐतिहासिक महत्व निर्धारित नहीं किया जा सकता।”¹ इन्हीं सवालों के साथ रामविलास शर्मा हिन्दी साहित्य के इतिहास की समस्याओं पर गंभीरतापूर्वक विचार करते हैं। ‘हिन्दी जाति का साहित्य’ किताब में हिन्दी साहित्य के इतिहास की समस्याओं पर चर्चा करते हुए प्रश्न खड़ा करते हैं कि “हिन्दी साहित्य के अनेक इतिहास लिखे गए हैं। क्या इनमें कहीं यह पहचान है कि यह साहित्य हिन्दी जाति का साहित्य है? गगन जिन सामाजिक परिस्थितियों में हिन्दी जाति का निर्माण हुआ उनकी पुरानी है? क्या अपभ्रंश जातीय निर्माण का माध्यम बनी? क्या

इस निर्माण में खड़ी बोली के अतिरिक्त अवधी और ब्रज की भी उल्लेखनीय भूमिका थी?” इन सभी प्रश्नों पर रामविलास शर्मा सम्यक् ढंग से विचार करते हैं। साथ ही इन प्रश्नों को अखिल भारतीय भाषायी सन्दर्भ देते हुए भारतीय साहित्य की भूमिका को रेखांकित करते हैं। इस बृहद कार्य-योजना में रामविलास शर्मा का सूत्र यह है कि “किसी भी भाषा के साहित्य का निर्माण अन्य भाषाओं के साहित्य से नितान्त अलगाव की अवस्था में नहीं होता।”² या फिर “किसी एक भाषा के साहित्य का अध्ययन दूसरी भाषाओं के साहित्य के अध्ययन में सहायक होता है।”³ इस सूत्र को और अधिक स्पष्ट करते हुए रामविलास शर्मा इस महत्वपूर्ण निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि “इतिहासकार चाहे मार्क्सवादी हो, चाहे गैर-मार्क्सवादी भारतीय साहित्य का इतिहास लिखेगा तो उसे विभिन्न भाषाओं के साहित्य के आपसी सम्बन्धों पर ध्यान देना होगा। यदि उसे किसी एक भाषा का साहित्य लिखना हो तो भी अन्य भाषाओं के साहित्य से उसके सम्बन्धों पर ध्यान देना होगा। वास्तविकता यह है कि भारत की किसी भी भाषा के साहित्य का इतिहास सही ढंग से अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य में ही लिखा जा सकता है।”⁴ रामविलास शर्मा की यह धारणा किसी को ऊपरी तौर पर रोमानी लग सकती है। सच्चाई यह है कि इसे हासिल किया जा सकता है। जब हम भारत राष्ट्र, भारतीय इतिहास, भारतीय संस्कृति की बात करते हैं तो ‘भारतीय साहित्य’ की संभावना से कैसे इंकार कर सकते हैं? भारतीय साहित्य कहे किसको? इसका क्या स्वरूप निर्धारित करें? इन सारे सवालों से सामना किसी भी भाषा के साहित्य के इतिहास लेखक के लिए अपरिहार्य है। भारतीय भाषाओं के सन्दर्भ में हिन्दी साहित्य के इतिहास की स्थिति को स्पष्ट करते समय सबसे पहले उत्तर और दक्षिण भारत के पारस्परिक अन्तःसूत्रों की व्याख्या का सवाल खड़ा होता है। इतिहास लेखन की अवसरवादी राजनीति ने उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत को एक दूसरे के बरक्स खड़ा करके देखा। भारतीयता को उत्तर और दक्षिण में बाँट कर देखने की यह कोशिश औपनिवेशिक इतिहास लेखन के जमाने से प्रारम्भ हुई जो आज भी किसी न किसी रूप में प्रचलित है। यह एक साम्राज्यवादी नीति है कि किसी भी देश के इतिहास में इतने फाँक कर दिये जाय जिससे कि वह देश आन्तरिक रूप से कमजोर हो जाय। इस प्रवृत्ति पर अचूक नजर रामविलास शर्मा की है। “किसी देश की प्रगति के लिए जैसे उसके इतिहास का ज्ञान आवश्यक होता है, संकट के समय जैसे जातीय इतिहास का ज्ञान, जातीय संस्कृति पर अभिमान, प्रेरणा बन जाता है, वैसे ही किसी देश का नाश करना हो, तो सबसे पहले उसके इतिहास को झुठलाना चाहिए, उसकी